Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2021 2(2), 304–308

CONTEMPORARY HINDI DRAMA: CONTEMPORANEITY OF SUBJECT MATTER

समकालीन हिंदी नाटक:विषय वस्तु की समकालीनता

Shashikant Rai [1]

[1] Assistant Professor, Punjab University Constituent College Patto Hira Singh

ABSTRACT

English: Many reasons are responsible for the contemporaneity of contemporary subject matter. The first thing is that our country has also been directly or indirectly affected by the global upheaval. Due to which the form of human sensitivity developed very rapidly. When we came in contact with Western culture in the 19th century, our life was definitely affected by it and at the same time, the ideology of change also emerged among the Indian intellectuals of that period with the global scenario.

Hindi: समकालीन विषय वस्तु की समकालीनता में बहुत से कारण जिम्मेदार है, पहली बात तो यह है कि वैश्विक उथल-पुथल से हमारा देश भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होता रहा है। जिस कारण मानवीय संवेदना का बहुत तेजी से स्वरूप विकसित हुआ 19वीं शताब्दी में पश्चिमी संस्कृति से जब हमारा साक्षात्कार हुआ तो उससे भी हमारा जीवन निश्चित रूप से प्रभावित हुआ और साथ ही साथ उस दौर के भारतीय बुद्धिजीवियों में भी परिवर्तन की वैचारिकी वैश्विक परिदृश्य के साथ सामने आयी।

Corresponding Author
Shashikant Rai,
skrai221115@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v2.i2.2021.4134

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2021 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

समकालीन विषय वस्तु की समकालीनता में बहुत से कारण जिम्मेदार है, पहली बात तो यह है कि वैश्विक उथल-पुथल से हमारा देश भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होता रहा है। जिस कारण मानवीय संवेदना का बहुत तेजी से स्वरूप विकसित हुआ 19वीं शताब्दी में पश्चिमी संस्कृति से जब हमारा साक्षात्कार हुआ तो उससे भी हमारा जीवन निश्चित रूप से प्रभावित हुआ और साथ ही साथ उस दौर के भारतीय बुद्धिजीवियों में भी परिवर्तन की वैचारिकी वैश्विक परिदृश्य के साथ सामने आयी।

हमारा रंगकर्म सामाजिक राजनीतिक द्वंद्व से अपने नए रूप में सामने आता रहा।"असली बात यही है कि रंग कार्य को केवल मनोरंजन का साधन मानने की औपनिवेशिक युग की प्रवृत्ति शुरू होते ही उसकी सांस्कृतिक और सृजनात्मक सार्थकता का एहसास हमारी रंग कर्मियों पर प्रबल हुआ।

उसके साथ ही एक ऐसी रंग दृष्टि शैली और रूप की तलाश बन गई जो हमारे जनसाधारण की चेतना के समीप और अपनी सांस्कृतिक परंपरा के अनुकूल हो, मनोरंजक हो पर कलात्मक दृष्टि से भी सार्थक हो"1

इसी नवीनता को ध्यान में रखते हुए भारतीय रंगकर्म अपने अपने नाटकों में समसामयिक घटना की विषय वस्तु को नाटकों में स्थान देना शुरू कर दिया भारतीय परिदृश्य को देखें तो एक तरफ भारत आजादी की ओर बढ़ रहा था आजाद भारत का स्वरूप कैसा हो इस पर मनन चिंतन शुरू था साथ

ही पूरे विश्व में युद्ध के माहौल ने जनमानस को ज्यादा चिंता में डाल दिया था। पर इस पर गौर करने वाली बात है कि हिन्दी नाटक ज्यादा मात्रा में अपनी विषय वस्तु पाश्चात्य नाट्य के आधार पर निर्मित करता था लेकिन एक ही झटके में अचानक से अपनी समाज की उथल-पुथल को नाटक का केंद्र बिंदु में लाने की कोशिश होने लगी मोहन राकेश ने अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहा है कि, "हिंदी नाटक रंगमंच की किसी विशेष परंपरा के साथ अनुस्यूत नहीं है। पाश्चात्य रंगमंच की उपलब्धियां ही हमारे सामने है परंतु ना तो हमारा जीवन उन सब उपलब्धियों की मांग करता है और ना ही यह संभव प्रतीत होता है कि हम उन रंग शिल्प की व्यापक रूप से ज्यों का त्यों अपने यहां प्रतिष्ठित कर दें।...

प्रश्न केवल आर्थिक सुविधा का ही नहीं एक सांस्कृतिक दृष्टि का भी है हिंदी रंगमंच को हिंदी भाषी प्रदेश की सांस्कृतिक मूर्तियों और आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करना होगा साथ ही रंगों और राशियों के हमारे विवेक को व्यक्त करना होगा"2

निश्चित रूप से समकालीन नाटकों में जीवन जगत के साथ ही समसामयिक जीवन संदर्भो को विभिन्न नज़रियों से देखने की कोशिश की गयी।

उसकी विषय वस्तु की नवीनता की ओर समसामयिकता की कथावस्तु को ज्यादा पिरोया गया है वह मानवीय जीवन के जनसाधारण की गतिविधियों को ज्यादा करीने (नजदीक) से देखने के साथ-साथ उनकी आकांक्षा उनकी उम्मीदों को नाटकों में ज्यादा अवकाश दिया और साथ ही रंगमंच पर पूरी संजीदगी से अभिव्यक्त किया गया।

समाज की ओर नाटकों को मोड़ने का सबसे प्रमुख कार्य भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने किया था। उनके बारे में कहा जाता है कि समकालीन राजनीति पर पूरी दृष्टि रखते थे, उनकी रचना इस पूरी स्थिति से निष्पन्न होती है। यानी हम कह सकते हैं कि विषय वस्तु की नवीनता का बीज भारतेंदु जी से शुरू हो जाती है लेकिन इसका फैलाव और विस्तार आजादी के बाद देखने को मिलता है।

"हिंदी नाट्य लेखन की समकालीन जरूरतों की पहचान हमें भारतेंदु और उनके प्रयासों से मिलती है। भारतेंदु के प्रयास सर्वथा विरोधी परिस्थितियों में अपनी संस्कृति, भारतीयता, नवजागरण, आधुनिकता, परंपरा और प्रयोग अपनी मिट्टी से लोकमानस से जुड़ने की दृष्टि संपन्नता का उदाहरण है एक संगठितकर्म जड़ता और दास्तां के विरुद्ध"3

साहित्य के विभिन्न विधाओं के बीच अपनी श्रव्य दृश्य क्षमता के कारण नाटक व्यापक अर्थ रखता है। प्रयोग की इसी संदर्भ में नवीनताओं का समावेश होता चला जाता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नाटक सबसे ज्यादा लोकप्रिय विधा के रूप में सामने आया इसलिए नाटक की चुनौतियां भी हमारे सामने आने लगी निश्चित रूप से रंगकर्म से जुड़े नाटककार भारतीयता और आधुनिक मानवीय संवेदना के अन्वेषण में जुड़ जाने के कारण नाट्य लेखन उसी की होड़ में अपने कथ्य और शिल्प की तलाश करने लगा यानी समकालीन कथ्य के प्रस्तुतीकरण पर जोर दिया जाने लगा। समकालीन भारत एवं विश्व समाज में घट रहे नित नवीन परिवर्तित संबंधों के द्वन्द्व,विडंबनाओं, राजनीतिक विफलताओं एवं सामाजिक विद्रूपताओं के साथ ही आधुनिक मनुष्य की बेबसी अकेलापन निराशापन से उपजा क्षोभ और करुणा तथा राजनीतिक,सामाजिक सत्ता की नियमों से पिसती लोगों की व्यथाएँ समकालीन हिंदी नाटकों में मुखर हुई।

समकालीन हिंदी नाटक ने जीवन के संपूर्ण पक्ष पर पूरी गहरी संवेदना के साथ आंतरिक और बाह्य जगत दोनों पक्षों को अपने नाटकों में स्थान दिया है। विषय वस्तु चाहे ऐतिहासिक हो,पौराणिक हो,सामाजिक या राजनीतिक हो सब को आधार बनाया गया है। व्यक्ति और समाज से जुड़ी हर समस्याओं का आकलन पूरी संवेदना के साथ किया गया समकालीन हिंदी नाट्य परिदृश्य को समृद्ध करने में उपेंद्रनाथ अश्क, धर्मवीर भारती, मोहन राकेश, जगदीश चंद्र माथुर, शंकर शेष,लक्ष्मी नारायण लाल, सुरेंद्र वर्मा, भीष्म साहनी, बलराज साहनी, हबीब तनवीर, ज्ञानदेव अग्निहोत्री, रमेश बक्षी, सत्यव्रत सिन्हा, विपिन कुमार अग्रवाल, मुद्राराक्षस गिरिराज किशोर, हमीदुल्लाह, ब्रजमोहन शाह, मणि मधुकर, बलराज पंडित, विनोद रस्तोगी, शरद जोशी, सुशील कुमार सिंह, गिरिराज किशोर, नरेंद्र कोहली, कुसुम कुमार मृणाल पांडे, मन्नू भंडारी, रामेश्वर प्रेम, असगर वजाहत, त्रिपुरारी शर्मा, नंदकिशोर आचार्य, दूधनाथ सिंह, प्रभाकर श्रोत्रिय, स्वदेश दीपक, राजेश जोशी, नाकबोड़स, अजय शुक्ल कृष्ण बलदेव वैद आदि कई नाटककारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अंग्रेजी साम्राज्यवाद के खिलाफ लोहा लेने वाली वेश्या अजीजुन के देश प्रेम के माध्यम से समसामयिक महत्व को दिखाया गया है।

आजादी मिलने के बाद भी हमारे देश के सत्ताधीश अपनी जनता की मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध नहीं करवा पा रहे हैं, एक तरफ जहां कुछ लोग बहुत ही ज्यादा सुविधा भोगी होते जा रहे हैं वहीं दूसरी तरफ अभावग्रस्त जनता की छटपटाहट को व्यक्त करने के लिए स्वदेश दीपक ने बहुत ही महत्वपूर्ण नाटक 'जलता हुआ रथ' में इस राजनीतिक कुचक्र को व्यक्त किया है।

इन सबके अतिरिक्त आजकल की राजनीति एवं सामाजिक समस्याओं को बहुत ही सशक्त रूप में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से अभिव्यक्त किया जा रहा है। नुक्कड़ नाटक बहुत ही कम लागत में आम जनमानस को जागरूक करने का एक महत्वपूर्ण मंच बन गया है। नुक्कड़ नाटकों के द्वारा व्यापक तौर पर व्यंग्यात्मक लहजे में अपनी समाज की विसंगतियों सत्ता की विडंबनाओं को अभिव्यक्त किया गया है और आगे भी किया जाता रहेगा।इस दृष्टि से असगर वजाहत का 'आन ब्यूटी',सफदर हाशमी का 'हल्ला बोल',राजेश कुमार का 'हमें बोलने दो' और जन नाट्य मंच का औरत, मशीन, पुलिस चरित्रम इत्यादि के द्वारा अपने समय की सत्यता को बखूबी उजागर किया गया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि समकालीन हिंदी नाटकों में राजनीति विषयवस्तु के माध्यम से सत्ता की विसंगतियों पर सत्ता की निरंकुशताओं के प्रभाव से निरीह जनता की विवसता और लाचारी को माध्यम बना कर समकालीन हिंदी नाटकों ने नई दिशा और ऊर्जा प्रदान किया है।

साहित्यकार का लक्ष्य केवल समाज की गतिविधियों को यथार्थ रूप में दिखाना ही नहीं होता अपितु उन से उपजी समस्याओं के रास्ते की तलाश भी अपनी रचनाओं के माध्यम से करता है। इस दृष्टि से समकालीन हिंदी नाटककारों ने अपने नाटकों में इन पक्ष को मजबूती के साथ रखा है।

समकालीन हिंदी नाटक और रंगमंच भारतीयता की खोज का अद्भुत मिशाल पेश कर रहा है। वर्तमान समय में उपनिवेशवाद एवं भूमंडलीकरण के प्रयास से जो एक रंग में एक ब्रांड में रंगने की लगातार कोशिश जारी है उस कोशिश का पर्दाफाश एवं लगातार विरोध समकालीन हिंदी नाटक और रंगमंच कर रहा है। विउपनिवेशवाद की प्रक्रिया की शुरुआत भारतेंदु हरिश्चंद्र से ही शुरू हो जाती है उसके बाद हमारे समकालीन नाटककार एवं रंग निर्देशक उस परंपरा को और ज्यादा समृद्ध कर रहे हैं। समकालीन हिंदी नाटक ताकतवर तरीके से सत्ता एवं व्यवस्था के जनविरोधी चरित्रों को उभारना और उसकी गहरी आलोचना करना, उसके भीतर की जनविरोधी हिंसात्मक प्रवृत्ति का अनावृत करना मजबूती के साथ शुरू किया है।

समकालीन हिंदी नाटक में प्रयुक्त की जाने वाली कथाओं में बेहद विविधता है और इस मामले में वह किसी भी विधा में सबसे ज्यादा विस्तृत विधा है। कथा आधार या जीवन का जितना विस्तृत फलक समकालीन नाटक में दिखाई देता है उतना न कविता,न कहानी और न ही उपन्यास में दिखाई देता है। अगर इस तरीके से देखा जाए तो समकालीन हिंदी नाटक को कविता का विस्तार कहा जा सकता है।

समकालीन हिंदी नाटक मनुष्य के सपनों के टूटने से उत्पन्न विवशता और निराशा की संवेदना का नाटक है। यह बात गौर करने योग्य है कि सामान्य शिक्षित जनमानस आंतरिक विघटन एवं घुटन का अनुभव करने लगा। मानव मन की अभिलाषा टूटने लगी और मोहभंग की स्थिति पैदा हुई। नई जनरेशन में कुंठा, वर्जना, घुटन, निराशाएँ एवं आशंका ने जन्म लिया।

अति आधुनिकता के घोर संकट जो पश्चिम देशों में मडरा रहे थे। वैसे ही संकट का सामना भारत में भी होने लगा। आधुनिक मनुष्य का आंतरिक संकट नाटककारों का ध्यान आकृष्ट करने लगा। इसी आंतरिक संकट को मूर्त रूप में प्रकट करने के लिए विविध विषयों से संपन्न समकालीन हिंदी नाटक की विषय वस्तु की पृष्ठभूमि तैयार की गयी। आंतरिकता के जटिल संसार को रंगमंच प्रतिबद्धता के साथ चित्रित करने के कारण समकालीन हिंदी नाटक, गंभीर सर्जनात्मक नाट्यसर्जन का आभास देने लगा।

मानवीय संबंधों के आंतरिक यथार्थ की खोज में समकालीन हिंदी नाटक सृजनशीलता का नया तेवर हमारे सामने प्रकट किया। समकालीन नाटककार वाह्य यथार्थ की जगह आंतरिक यथार्थ को नाटक में चित्रित करने की कोशिश करने लगे। वे मानव के गहरे अंर्द्वन्द्व, उलझाव एवं भटकाव के माध्यम से समसामयिक जीवन की यथार्थ दशाओं को व्यंजित करने में प्रवृत्त हुएं। उनलोगों ने प्रस्तुतीकरण की प्रतीकात्मक शैली को स्वीकार कर नाट्य विषयवस्तु को अधिक व्यंजक और काव्यात्मक स्वरूप प्रदान किया। प्रतीकात्मक शैली को महत्व देने के कारण ही समकालीन हिंदी के नाटककार आधुनिकता व्यंजक संवेदनाओं को व्यक्त करने के लिए मिथकीय या पौराणिक प्रसंगों को नई तार्किकता के साथ प्रस्तुत करने लगे। समकालीन हिंदी नाटककार पश्चिम के नए नाट्य प्रयोगों जैसे ब्रेख़्त के महाकाव्यात्मक रंगमंच, बेकेट के 'एब्सर्ड' नाट्य लेखन की शैली, अस्तित्व आदि चेतना के नाटक की संवेदना और शिल्प से बहुत हद तक प्रभावित हुएं हैं। पर इसका परिणाम यह हुआ कि भारतीय यथार्थ के संदर्भ में नाटक बहुत अजनबी लगने लगे हैं। इसको अपने युगबोध के साथ जोड़कर समकालीन हिंदी नाटककारों ने प्रभावशाली अभिव्यक्ति प्रदान की। समकालीन नागरिक और साहित्यकार जिस तरह का अंतर्द्वंद्व महसूस कर रहा था, उसकी अभिव्यक्ति में पश्चिम की उक्त रंग शैलियां बड़ी सहायक सिद्ध हुई।

मार्क्सवादी वैचारिकी का भारतीय रंग प्रयोग समसामयिक जीवन की सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक राजनैतिक आदि समस्याओं को नाटक का विषय वस्तु बनाने वाली एक नाटक की धारा निकली जिसे जनवादी नाटक कहा गया। जिसने मजदूर, किसान और आवाम की शोषित जनता के आवाज़ को अपने नाटक और रंगमंच में बखूबी अभिव्यक्त किया। जन नाट्य मंच के रंगकर्मी और कलाकार आजादी के बाद भी लगभग 1962 तक पर्याप्त सक्रिय रहें। समकालीन हिंदी नाटक में समाजोन्मुखी धारा को प्रभावित करने में जन नाट्य मंच का योगदान महत्वपूर्ण है। आगे समकालीन हिंदी नाटक के विषय वस्तु की समकालीनता को विस्तृत परिदृश्य में समझने की कोशिश करेंगे।

2. ऐतिहासिक,पौराणिक आधारित नाटकों की समकालीन विषयवस्तु

हिंदी साहित्य की तमाम विधाओं में हम यह देख सकते हैं, कि लेखक अपने समय की सत्यता को दिखाने के लिए आम जनमानस तक उसकी समझ बनाने के लिए पौराणिक और ऐतिहासिक पात्रों का या कथानक पर आधारित रचनाओं का सृजन करता है, इसका उद्देश्य यह था कि पौराणिक और ऐतिहासिक विषयवस्तु की आमजनमानस में स्वीकृति और साथ ही साथ उस कथावस्तु के चरित्रों की लोकप्रियता इसी कारण बहुत सारे नाटककार भी अपने समय की सत्य को दिखाने के लिए पौराणिक एवं ऐतिहासिक विषय वस्तु का सहारा लेते थे। यह सर्वविदित है कि हिंदी नाटक में ऐतिहासिक,पौराणिक मिथक का प्रयोग नाना बिधि रूपों में होता रहा है और समकालीन हिंदी नाटक भी इससे अछूता नहीं है। इस क्रम में नाटककार को प्रसिद्ध कथा उपलब्ध हो जाती है जिसके माध्यम से वह अपने समय सत्य को अभिव्यक्ति देता है और उसके सामने प्रयोगधर्मिता की अनंत संभावनाएं खुल जाती है।

इसकी शुरुआत भारतेंदु हरिश्चंद्र अपने 'नील देवी' नाटक से कर दी थी यह एक ऐतिहासिक नाटक है भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'नीलदेवी' लिखने का कारण बताते हुए लिखा है कि वह इस नाटक द्वारा यह भ्रम दूर करना चाहते थे कि भारत में स्त्रियों की सदा वही दशा रही है जो उनकी समय में थी इसका कथानक संक्षेप में इस प्रकार है अमीर अब्दुल शरीफ खान और राजा सूर्य देव में युद्ध होता है जिसमें राजा सूर्य देव हार जाते हैं पिजड़े में उन्हें बंदी बनाकर रखा जाता है। लेकिन वे पिजड़ा तोड़कर लड़ते हुए मरते हैं। रानी नील देवी गणिका भेष में अमीर को छल कर उसका वध करती है इस

कथानक से भारतेंदु का मंतव्य यह रहा कि स्त्रियां पूर्व काल में भी स्वाबलंबी और युद्ध में पीछे न हटने वाली सिद्ध हो जाती है यह नाटक यह बताने की कोशिश करता है कि भारत की पराधीनता का प्रमुख कारण मुसलमान रहे हैं। किस प्रकार मुसलमानों ने भारत को पतन की ओर ले गए। इस समय के इन नाटकों में तत्कालीन समस्याओं को अतीत की आधार पर उस के संदर्भ में देखने का प्रयास अवश्य किया गया पर मूलतः वह अपने समय के तत्कालीन समस्याओं को प्रश्न अंकित करता है इसी क्रम में माधव शुक्ल ने भी अपने नाटकों के द्वारा राष्ट्रीय चेतना को जगाने का कार्य किया था ।

प्रसाद धारा के ऐतिहासिक पौराणिक नाटककारों में हरि कृष्ण प्रेमी, उदय शंकर भट्ट ,लक्ष्मी नारायण मिश्र, डॉ रामकुमार वर्मा और सेठ गोविंद दास प्रमुख हैं। हरि कृष्ण प्रेमी ने मुसलमान एव राजपूत काल के इतिहास को अपने नाटकीय कथानको का आधार बनाया। उन्होंने अपने नाटकों के द्वारा राष्ट्रीय एकता के भाव पैदा करने का प्रयास किया। जयशंकर प्रसाद ने ऐतिहासिक चरित्रों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को प्रेरणा और धार देने का प्रयास किया उनके सभी नाटक राष्ट्रीयता का पुट लिए हुए हैं। उनके प्रमुख नाटक राज्य श्री, हर्षवर्धन, अजातशत्रु, चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त,ध्रुवस्वामिनी आदि। प्रसाद ने नाटकों के माध्यम से विशाल जनमानस को भारतवर्ष के सम्मान की रक्षा के लिए सोचने पर विवश कर दिया।

आगे चलकर समकालीन नाटककारों ने ऐतिहासिक पौराणिक कथानक पर आधारित नाटकों का पूर्ववर्ती नाटककारों के तरह प्रयोग नहीं किया। उनका उद्देश्य इतिहास की व्याख्या या दुहराव नहीं अपितु समकालीन बोध एवं संवेदना का वाहन मात्र बन गया।

वास्तव में नाटक का उद्देश्य वातावरण को ऐतिहासिक बनाना नहीं अपितु आज के जीवन की पीड़ा वेदना और संत्रास को शाश्वतता प्रदान करना है।

यहां आधुनिक जीवन की जटिलताओं कुंठाओ अंतर्द्वंद का चित्रण ऐतिहासिक पौराणिक परिप्रेक्ष्य में किया गया है। श्री रमेश गौतम के अनुसार, "इतिहास के परिपार्श्व से उन्होंने एक क्षण को उपलब्ध किया है, जो अतीत में भी था वर्तमान में भी है और भविष्य में भी हो सकता है ।अर्थात इतिहास की स्थूल विभाजन रेखा उस क्षण से टकराकर समाप्त हो जाती है। उनके लिए घटनात्मक इतिहास का कोई मूल्य नहीं अपितु उसके बीच एक दुखता हुआ मार्मिक क्षण है जो समय को अविभाज्य रूप में एक केंद्र पर वहन करता है। लहरों के राजहंस, अंधायुग, सूर्य मुख, आदि में ऐतिहासिक एवं पौराणिक आख्यानों के परिपेक्ष में एक क्षण की उपलब्धि का ही प्रयास है नाटककारों को यह क्षण अतीत से मिला किसी वर्तमान स्थिति में भी मिल सकता था अतः उनका ऐतिहासिक अथवा अनैतिहासिक होना विशेष महत्व नहीं रखता।"9

मोहन राकेश जी एक जगह लिखा है कि धर्मवीर भारती,जगदीश चंद्र माथुर और मैंने ऐतिहासिक नाटक इसलिए नहीं लिखे हैं कि हम इतिहास की व्याख्या करना चाहते हैं या इसलिए कि हमें किसी काल विशेष से लगाव था। वो कहते हैं कि हमने ऐतिहासिक चरित्रों का प्रयोग क्यों किया?, क्योंकि उन चरित्रों को लोग भली-भांति जानते हैं परिचित हैं पता उनके नाम का प्रयोग करने की वजह से मुझे किसी अन्य प्रतीक कों गढ़ने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

जगदीश चंद्र माथुर ने अपने नाटकों की कथावस्तु में पौराणिक ऐतिहासिक आधार लेते हुए जीवन की आधुनिक समस्याओं एवं द्वंद्वों को उठाया है।

उनका सबसे महत्वपूर्ण नाटक कोणार्क हिंदी नाटक के इतिहास में विशिष्ट स्थान रखता है। कोणार्क की रचना में आधार स्वरूप ऐतिहासिक कथा को ग्रहण किया गया है, इसकी कथावस्तु का आधार उत्कल प्रदेश के महाप्रतापी राजा नरसिंह देव के शासनकाल में भुवनेश्वर में निर्मित कोणार्क का जीर्ण शीर्ण मंदिर है। उन्हीं के शासनकाल में 'साहित्य दर्पणकार' था मंत्री राजराज चालुक्य थे। नाटक में ऐतिहासिकता का आधार मात्र इतना ही है,मूलतःयह नाटक कलाकार के संघर्ष पीड़ा और प्रतिशोध को लेकर चलता है। इस नाटक में तीन प्रकार की अवधारणाओं में संघर्ष समायोजित है सर्जना और विध्वंस के बीच पुरानी और नई पीढ़ी के बीच तथा राजसत्ता और जनसत्ता के बीच।

इस नाटक में "कलाकार के व्यक्ति निष्ठा अहं और उसके व्यापक सामाजिक -राजनीतिक दायित्व बोध, क्षुद्र स्वार्थ और विराट आदर्श तथा स्वच्छंदतावादी दृष्टिकोण के साथ यथार्थवादी चेतना का मणिकांचन योग हुआ है।"10

समकालीन हिंदी नाटक में अपने विषय वस्तु की समकालीनता को लेते हुए अनेक प्रयोग हुए हैं। समसामयिक जीवन की तमाम पहलुओं को समकालीन हिंदी नाटक के विषय वस्तु से जोड़ा गया है। समकालीन हिंदी के नाटककार अपने परिवेश की पीड़ाओं को अनुभव कर एवं पीढ़ी की दिशा हीनता, दिग्भ्रमित होते समाज, पतोन्मुखी राजनीति, शारीरिक धरातल पर केवल टिका स्त्री पुरुष का संबंध, शारीरिक संबंधों में स्वाद परिवर्तन हेतु मांसल सौंदर्य की ओर पलायन, सरकारी कामकाज की अव्यवस्था, नौकरशाही की अराजकता, भ्रष्टाचार और भूमंडलीकरण के प्रभाव इत्यादि ज्वलंत प्रश्नों को नाटक का कथ्य बनाया गया है।

संदर्भ ग्रंथ

नेमीचंद्र जैन, रंग परंपरा ,पृष्ठ 69
मोहन राकेश, आषाढ़ का एक दिन, दो शब्द संस्करण 2011
डॉ गिरीश रस्तोगी, नाटक तथा रंग परिकल्पना ,पृष्ठ 16, प्रथम संस्करण 1992
जयदेव तनेजा, आज की हिंदी रंग नाटक ,पृष्ठ 154
हीरेन मुखर्जी चंद्रेश्वर कर्ण, भारत में जन नाट्य आंदोलन ,पृष्ठ 154

जयदेव तनेजा, समकालीन हिंदी नाटक और रंगमंच ,पृष्ठ 44
सुशील कुमार सिंह, सिहासन खाली है पृष्ठ 68
जयदेव तनेजा, आज की हिंदी रंग नाटक ,पृष्ठ 116
रमेश गौतम, समकालीनता के अतितोन्मुखी नाटक, पृष्ठ 89
जयदेव तनेजा, आज की हिंदी रंग नाटक पृष्ठ 18